ISSN No.: 2455-6130
Volume 1, Issue 4, 2016, pp. 11-15

website: www.ijoetr.com

International Journal of Emerging Trends in Research

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में प्राकृतिक आयाम

कुमारी दीपा, कैथल

सारांश

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में प्राकृतिक आयाम मजबूती के साथ उभरा हैं। प्रकृति के बारे में उनके विचार मौलिकता लिए हुए हैं तथा मानव के साथ अच्छे अर्न्त–सम्बन्धों की कामना करते हैं। उसने अपने लेखन में प्रकृति एवं मानव के साथ सम्बन्धों का सूक्ष्म एवं गहराई के साथ अध्ययन किया गया है। वो प्रकृति को मां कि तरह पूजते हैं, एवं विभिन्न उपन्यासों में बार–बार इसके महत्त्व को स्वीकार करते हैं। प्रकृति के प्रभाव में ही वो समाज का विष्लेषण करते हैं। उन्हें प्रकृति का चित–चितेरा कहा जाए तो उचित ही होगा। कुछ प्रसंगों का यहां उल्लेख किया गया है, जिसमें प्रकृति के बारे में कोहली का दृष्टिकोण पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है।

1. प्रकृति का महत्व

'अभिज्ञान' उपन्यास में कोहली सुदामा के माध्यम से प्रकृति के महत्त्व पर विचार करता है। वह प्रकृति को मानव के लिए व्यावहारिक देवता के रूप में प्रतिस्थापित करता है। सुदामा विचार करता है कि उसका दोस्त कृष्ण भी प्रकृति के महत्व को समझता था, तभी तो उसने गोवर्द्धन की पूजा करवा दी थी। वह तर्क देता है,

'तभी तो उसने अपने बाल्यकाल में ही इन्द्र की पूजा के स्थान पर गोवर्द्धन की पूजा करवा दी थी..... वर्तमान का यथार्थ तो गोवर्धन गिरि ही है। यमुना के कछारों में रहने वाली प्रजा के लिए कोई उंचा स्थान कितना महत्तवपूर्ण हो सकता है, यह तो यमुना की एक ही बाढ़ ने सिद्ध कर दिया था। अपनी विपत्ति के वे दिन यमुना–तटवासियों ने गोवर्द्धन की उंचाई पर ही काटे थे..... पूजा के नाम पर गंगा में पुष्प और मिष्ठान अर्पित करने वाला व्यक्ति तो उसके जल को गन्दा ही कर रहा है, किन्तु जो व्यक्ति समझता है कि गंगा का जल यदि हिमालय की इस ओर बहने के स्थान पर, किन्हीं कारणों से

हिमालय की उस और बह गया होता, तो गंगा–यमुना का यह मैदान मरूभूमि हो गया होता.....गंगा मनुष्य के जीवन के लिए आवष्यक जल उसे देती है और अन्न उत्पन्न करने के लिए भूमि की सिंचाई करती है। तभी तो गंगा के तटों पर बड़े–बड़े नगर बस गये हैं। राज्य स्थापित हो गये हैं। उसके तटों की भूमि अत्यन्त उपजाउ हो गयी है.....उसी भूमि को प्राप्त करनें के लिए ही तो अनेक युद्ध होते हैं।[प]

2. जल का महत्व

'अभिज्ञान' उपन्यास में कोहली सुदामा के माध्यम से प्रकृति के विभिन्न तत्वों पर विचार करता है। सुदामा जल पर विचार करता है,

जल, सार्वजनिक उपयोग की वस्तु है। केवल 'उपयोग' कहना शायद ठीक नहीं है। वह तो मानव–जीवन की आवष्यकता है। मार्ग पर चलते हुए, दो–चार कोस तक जल न मिले तो उसका महत्त्व प्रकट होने लगता है–वह जीवन का आधार है।'[पप]

कोहली अपने उपन्यास 'अभ्युदय : दीक्षा' में भी प्रकृति को बहुत महत्त्व देता है, सीता वनवास के दौरान राम को कहतीं है,

'अयोध्या में सरयू हमारी होते हुए भी हमारी नहीं थी। मंदाकिनी हमारी न होते हुए भी हमारी है। राजनीतिक अधिकार से प्राकृतिक अधिकार कितना अधिक सहज है।

अधिकार तो सारी धरती का है। राम बोले, स्वयं को धरती की संतान बना लेने पर सारे अधिकार प्राप्त हो जाते हैं।'[पपप]

3. प्रकृति और अनुशासन

'अभिज्ञान' उपन्यास में कोहली प्रकृति के अनुषासन पर विचार करता हुआ कहता है कि जिसे मानव जड़ मानकर चल रहा है, वास्तव में वहां कितनी नियमतता एवं अनुषासन है। मानव को प्रकृति से सीखना चाहिए। कोहली विचार करता है,

'इस सृष्टि को देखो। कितनी व्यवस्था है इसमें, कितनी नियमबद्धता और कितना प्रगाढ़ अनुषासन। क्या तुम्हे कहीं कोई अपवाद दिखाई देता है?....वाष्प बनने, वायु के बहने, वर्षा होने, भूचाल के आने, ज्वालामुखी के फूटने अपने नियम होते हैं, किन्तु इनसे जो घटना जहां घटती है, उसका कारण वहीं नही होता। तुम्हारे गांव में जो वर्षा होती है, उसका कारण असंख्य योजन दूर स्थित सूर्य तथा सहस्त्रों योजन दूर सागर में है। जिस वायु के सहारे मेघ यात्रा करते हैं, उनका सम्बधं सारी पृथ्वी के भुगोल से है। जिस भूचाल से कोई नगर डोल जाता है, उसका सम्बधं उस नगर से नहीं, पृथ्वी के गर्भ में होने वाली घटनाओं से है। पर्वत की जिस चोटी से लावा फूटता है, उसका निर्माण अनेक योजन नीचे, भूगर्भ के नियमों के अनुसार होता है।....इसीलिए कहता हूं कि प्रकृति की व्यवस्था पूर्ण है, नियमबद्ध है। मनुष्य उसे न जाने, न समझ पाये तो दोष मनुष्य के अधूरे ज्ञान और सीमित समझ का है।'[पअ]

1.4. प्रकृति एवं मानव

'अभिज्ञान' उपन्यास में कोहली सुदामा के माध्यम से प्रकृति एवं मानव सम्बंधों पर विचार करता है,

'प्रकृति कर्म का फल तत्काल देती है, किन्तु अकर्म का दण्ड भी उसी षीघ्रता से प्रदान करती है। मनुष्य और प्रकृति के इस निरन्तर संघर्ष का उदाहरण मैं मैदान और पगडण्डी से देता हूं। जिस पथ पर सैकड़ो लोग प्रतिदिन चलते हैं, वहां घास नहीं उगती और पगडण्डी बन जाती है। पर मनुष्य के पग रूके और प्रकृति ने उसे अपनी षक्ति का प्रमाण दिया। वहां तत्काल घास उगेगी, पौधे और वृक्ष उगेंगे। जीव–जन्तु आयेंगे.....सृष्टि बहुत बड़ी है, इसलिए प्राकृतिक व्यवस्था भी बहुत विराट है। मानव–समाज उसका एक छोटा–सा अंग है। मनुष्य से अलग होकर मानव समाज में प्राकृतिक व्यवस्था नहीं चलती।'[अ]

कोहली मानव को प्रकृति का ही महत्त्वपूर्ण भाग मानते हैं, उनके अनुसार समाज में व्याप्त समस्याऐं वास्तव में प्रकृति का द्वंद मात्र है, मानव तो उसके यन्त्र के रूप में कार्य करता है। 'अभिज्ञान' उपन्यास में कोहली फिर से विचार कर रहा है–

प्रकृति बाहर की घटनाओं में ही तो नहीं है। मनुष्य का मन, उसकी भावनाएं, उसकी चेतना दब जाये, किन्तु दुःख, पीड़ा और यातना में चेतना का जवर मुखर होकर उसके सम्मुख आता है। मैंने कहा न कि सन्तुलन स्थापित करने के लिए प्रकृति ही प्रकृति के विरूद्ध लड़ रही है। अन्याय, दमन, षोषण तथा अत्याचार को समाप्त करने का आहव्ान भी तो प्रकृति का ही आहव्ान है।'[अप]

कोहली प्रकृति को सर्वषक्तिमान मानता है। कोहली कहते हैं,

'प्रकृति का चक्र, जिसे नीचे से उपर ले जाता है, उसे उपर से नीचे भी ले आता है।'[अपप]

कोहली 'तोड़ो कारा तोड़ो' में भी प्रकृति के नियमों पर प्रकाष डालता है। उन्होने विज्ञान में प्रचलित विभिन्न सिद्धांतो का उद्धहरण देकर इसको स्पष्ट किया है–

'अच्छा, यह बताओ कि वृक्ष से टुटकर आम गिरता है, तो पृथ्वी पर ही क्यों गिरता है? आकाष की और क्यों नहीं उड़ जाता? गोपू के पिता ने पूछा।

क्योंकि पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति उसे अपनी ओर खींच लेती है। नरेन्द्र के चेहरे पर ऐसा भाव था, जैसे गोपू के पिता ने पूछा उससे अत्यंत साधारण प्रष्न पूछकर उसके ज्ञान का अपमान किया था।

ते फिर वह षक्ति आकाष पर उड़ते हुए पक्षी को खींचकर भूमि पर क्यों नही पटकती ? गोपू के पिता अपने परीक्षण को और कठोर करते गए।

वह पक्षी को भी लगातार खींच रही है; किंतु पक्षी उसके विरूद्ध अपनी उर्जा के आधार पर उड़ता है। नरेन्द्र बोला, उसकी उस उर्जा का समाप्त होना ही उसकी थकान है। यदि थककर, उर्जाहीन होने पर भी वह उड़ने का प्रयत्न करेगा, तो आम के समान ही पृथ्वी पर आ गिरेगा.....।'[अपपप]

कोहली 'मत्स्यगन्धा' उपन्यास में प्रकृति को स्पष्ट करते है,

'पर देवव्रत बहुत समय तक वनों और आश्रमों में रहे हैं। उन्होने प्रकृति को बहुत निकट से देखा है–वनस्पति को भी और पषु–जगत को भी। वनस्पति की उत्पति, विकास और अवसान– तीनों को देखने से प्रकृति का स्वरूप उनके सामने प्रकट हुआ है।.....वर्षा रितु आती है तो धरती का कण–कण जैसे सृष्टि करने को आतुर हो उठता है। कहीं, किसी प्रकार बीज डाल दिया जाये, किसी पौधे की षाखा तोड़ कर लगा दी जाये, पृथ्वी उसे अपने गर्भ में धारण कर सप्राण कर देती है। उन पौधो का विकास होता है। उनमें फूल और फल आते हैं और वे पौधे फिर से अपने बीज में परिणत हो जाते हैं।.... ..यह तो प्रकृति ता चक्र है। इसे ही माया का प्रपंच कहते हैं क्या? शून्य में से आकार प्रकट होता है और फिर वह आकार सिमट कर षून्य में समा जाता है....'[पग]

इसी उपन्यास में कोहली प्रकृति की तुलना मां से करता है, तपस्वी की मत्स्यगन्धा से यह विचार झलकता है,

'....मैनें आज तक केवल अपनी मां का सौन्दर्य ही देखा था और उसी पर मुग्ध था...

तुम्हारी मॉ अहुत सुन्दर है ? स्त्यवती ने उसे टोक दिया, कहॉ रहती हैं तुम्हारी अम्मा?

मेरी मॉ तो सब जगह रहती है।

सब जगह ?

हॉ! सब जगह! मैं तो माता प्रकृति की बात कर रहा हूँ। तपस्वी की ऑखो का मुग्ध भाव क्रमषः उसकें चेहरे पर संचित होता जा रहा था, मैंने आज तक प्रकृति से सुन्दर कुछ भी नहीं देखा था।'[ग]

अतः अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नरेन्द्र कोहली के लेखन में प्रकृति एवं मानव के साथ सम्बन्धों का सुक्ष्म एवं गहराई के साथ अध्ययन किया गया है। वो प्रकृति को मां कि तरह पूजते हैं, एवं विभिन्न उपन्यासों में बार–बार इसके महत्व को स्वीकार करते हैं। प्रकृति के प्रभाव में ही वो समाज का विष्लेषण करते हैं, तथा वह मानवे को इसका एक महत्त्वपूर्ण तत्व मानकर अपने विचार स्थापित करता है। वह इस विचार पर जोर देता है कि मानव प्रकृति से बहुत कुछ सीख सकता है। प्रकृति मानव के पथ–प्रदर्षक का भी कार्य करती हैं।

सन्दर्भ–सुची

[प]. नरेन्द्र कोहली, **'अभिज्ञान',** पृ.स. 143

[पप]. ....वही....., पृ.स. 78.

[पपप]. नरेन्द्र कोहली, **'अभ्युदय : दीक्षा',** पृ.स. 296.

[पअ]. नरेन्द्र कोहली, **'अभिज्ञान',** पृ.स. 112.

[अ]. नरेन्द्र कोहली, **'अभिज्ञान',** पृ.स. 120–122.

[अप]. ....वही....., पृ.स. 133

[अपप]. नरेन्द्र कोहली, **'अभिज्ञान',** पृ.स. 136.

[अपपप]. नरेन्द्र कोहली, **'तोड़ो कारा तोड़ा',** पृ.स. 98.

[पग]. नरेन्द्र कोहली, **मत्स्यगन्धा**, पृ.स., 17.

[ग]. नरेन्द्र कोहली, **मत्स्यगन्धा**, पृ.स., 33.